# पाठ–3

## तुलसीदास

**कवि परिचय**

जन्म – 1532 ई.

मृत्यु – 1623 ई.

रामभक्ति काव्य के अमर दीप तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के राजापुर में हुआ माना जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में माता–पिता से बिछुड़ने के कारण इनका जीवन अत्यन्त संघर्षमय रहा है। बाबा नरहरिदास को तुलसीदास का गुरू अन्तः साक्ष्य के आधार पर माना जाता है। तुलसी भगवान श्रीराम के प्रति सर्वस्व समर्पण कर काव्य रचना करते थे। उनकी भक्ति भावना का मूल उत्स लोक संग्रह एवं लोक मंगल की भावना है। तुलसी में समन्वय की विराट चेष्टा और अद्‌भुत शक्ति थी, सनातन हिन्दू धर्म के भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों के पारस्परिक विद्वेष को कम करने का उन्होंने अथक प्रयत्न किया।

तुलसीदास ने रामभक्ति से प्रेरित होकर अपने रामकथा ग्रन्थों में राम तथा उनके भक्तों का जो चरित्र प्रस्तुत किया है, वह मानवता के सर्वोच्च आदर्शों की स्थापना करता है। इस सम्बन्ध में 'रामचरित मानस' अद्वितीय रचना है। तुलसीदास ने प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य अवधी एवं ब्रजभाषा में स्वाभाविक रूप से सृजित कर काव्य रचना में सिद्धहस्तता को प्रत्यक्ष किया है। तुलसी का सम्पूर्ण काव्य उन्हें भारत वर्ष का लोक नायक प्रतिष्ठित कर आधुनिक युग की प्रत्येक समस्या का समाधान उपलब्ध कराता है।

**कृतियाँ–**

रामचरितमानस, रामलला नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी। (अवधी भाषा) विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण–गीतावली (ब्रजभाषा)

**पाठ परिचय–**

संकलित काव्यांश 'रामचरित मानस' से लिया गया है। रामचरित मानस के सुन्दर प्रसंग के माध्यम से तुलसीदास ने केवट का श्रीराम के प्रति अगाध विश्वास तथा श्री राम का भक्त के प्रति अनन्य प्रेम उद्‌घाटित किया है। आजीविका के एकमात्र साधन नाव को बचाने के बहाने से चरण धोने का सौभाग्य प्राप्त करना केवट की भक्ति और दृढ़ता का परिचय कराते हैं।

वहीं श्रीराम का केवट को इच्छा के अनुरुप चरण पखारन कर नाव उतारने को कहना, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की विनम्रता का उद्‌घोष करता है। इस सम्पूर्ण प्रसंग के माध्यम से तुलसीदास श्रीराम के सर्व जन के प्रति सहृदयता और संवेदन शीलता को प्रमाणित करते हैं। तुलसी के इस प्रसंग से विविध छन्दों का प्रयोग एवं उद्धरण ज्ञात होते हैं।

## केवट का भाग्य

**चौपाई**– बरबस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ।।
मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ।।
चरन कमल रज कहुँ सब कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ।।
छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ।।
तरनिउ मुनि–घरिनी होई जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ।।
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू । नहिं जानउँ कटु अउर कबारू ।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ।।
**छंद**– पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव  न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साँची कहौं ।
बरू तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारू उतारिहौं ।।
**सोरठा** –सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहसे करूनाऐन, चितइ जानकी लखन तन ।।
**चौपाई**–कृपासिन्धु बोले मुसुकाई । सोइ करू जेहिं तव नाव न जाई ।।
बेगि आनु जल पाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ।।
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ।।
पद नख निरखि देवसरि हरषी । सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी।।
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ।।
अति आनन्द उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ।।
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ।।
**दोहा** – पद पखारि जलु पान करि  आपु सहित परिवार ।।
पितर पारू करि प्रभुहि पुनि  मुदित गयउ लेइ पार ।।
**चौपाई**–उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ।।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ।।
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ।।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ।।
नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ।।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ।।
अब कुछ नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ।।
फिरती बार मोहि जो देबा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ।।

**दोहा**—बहुत कीन्हीं प्रभु, लखन सियँ, नहिं कछु केवटु लेइ
विदा कीन्ह करूनायतन, भगति बिमल बरू देइ ।।

**शब्दार्थ—**

| | |
|---|---|
| सुरसरि—गंगा, | पद्म—कमल, |
| बेगि—शीघ्र, | तीर—किनारे, तट पर, |
| भव सिंधु—संसार, | रज—धूल कण, |
| पखारि—धोकर, | सिला— पत्थर, |
| मुदित—प्रसन्न, | काठ—लकड़ी, |
| अकुलाई—व्याकुल, | प्रतिपालक— पालन पोषण, |
| मुदरी—मुद्रिका । | |

## अभ्यासार्थ प्रश्न

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्री राम के स्पर्श से शिला से नारी बनने वाली स्त्री का नाम क्या था?
   क) सावित्री  ख) अहल्या
   ग) शबरी  घ) गौतमी
2. पठित काव्यांश किस काव्य ग्रन्थ से उद्धृत है?
   क) रामचरित मानस  ख) कवितावली
   ग) विनय पत्रिका  घ) दोहावली

### अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. केवट ने नाव में बैठाने की श्रीराम के समक्ष क्या शर्त रखी ?
4. 'सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
5. 'एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं' में किस 'पुन्यपुंज' का उल्लेख किया गया है?

### लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. 'तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई' की अन्तर्कथा लिखिए ।
7. 'अब कुछ नाथ न चाहिअ मोरें 'केवट ने श्रीराम को गंगा पार उतार कर क्या प्राप्त कर लिया था कि उसे कुछ चाहत नहीं थी?
8. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए—
   सुर, सुमन, नारी, तीर, नाव ।

**निबन्धात्मक प्रश्न**

9. भावार्थ लिखिए–

   क) सुनि केवट.........................लखन तन।

   ख) एहि प्रतिपालऊ..........................................कहहू।।

10. इस काव्यांश के आधार पर श्रीराम–केवट प्रसंग को कथा के रूप में लिखिए।

**वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला**

1. ख
2. क